# अलनीना / एलनीनो प्रभाव

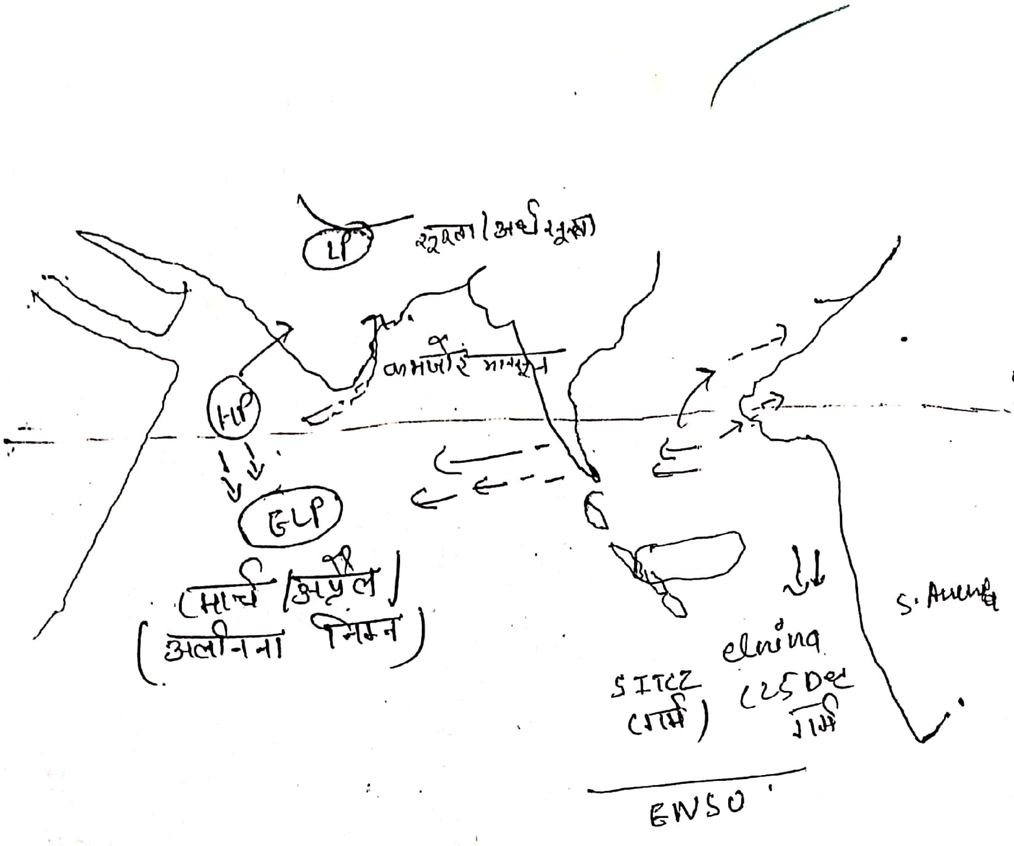


मानसून की सक्रियता एवं मानसूनी वर्षा को अलनीना गर्म जलधारा भी प्रभावित करती है इसकी उत्पत्ति पेरू तट पर ग्रीष्म काल में SITCZ की स्थिति में होती है। दोनों की सम्मिलित घटना को enso या अलनीना दक्षिणी दोलन कहते हैं। enso के मजबूत होने की स्थिति में दक्षिणी महासागरों के तापमान में अधिक वृद्धि हो जाती है जिसका प्रभाव वैश्विक जलवायु परिवर्तन सहित भारतीय मानसून पर होता है। जब अलनीना हिन्द महासागर में प्रवेश कर जाती हैं तब इसके द्वारा निम्न

Scanned with CamScanner

वायुदाब क्षेत्र का विकास होता है जिसे अलनीना निम्न कहते हैं (Alnina Low) इसके प्रभाव अरब सागर के उच्च वायुदाब से हवाएँ अलनीना निम्न वायुदाब की ओर प्रभावित होती हैं। ऐसे में मानसूनी हवाओं का विभाजन हो जाता है और मानसून कमजोर हो जाता है। 2014 में भी मानसून के भारत में देर से प्रवेश करने और प्रारंभ में सूखे का प्रभाव उत्पन्न होने का प्रमुख कारण अलनीनो को माना जाता है। इसके पहले भी 2002, और 1997 का सूखा भी अलनीनो से संबंधित है।

यदि अलनीना अधिक प्रभावी होता है तब पूर्वी जेट की सक्रियता के बावजूद मानसून अच्छा नहीं होता।

अलनीना का प्रभाव सामान्यतः 4 से 5 वर्ष के अन्तराल पर उत्पन्न होता है। लेकिन अलनीना की उत्पत्ति व तापमान में अधिक वृद्धि की स्पष्ट वैज्ञानिक व्याख्या का अभाव है।

अलनीना के विपरीत जब दक्षिणी महासागरों के तापमान में कमी आ जाती है तब इसे <u>ला नीना प्रभाव</u> कहते हैं। इसके कारण मानसून मजबूत होता है। लानीना को अलनीना गर्म जलधारा का ही ठंडा रूप माना जाता है। सामान्यतः जब अलनीना सक्रिय नहीं होता तब यह

लानीना की स्थिति होती है। इसके प्रभाव से हिन्द महासागर के उच्च वायुदाब में वृद्धि होती है जो दक्षिण पश्चिमी मानसून को मजबूत करता है। लानीना की सक्रियता में अतिवृष्टि और बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है।

## मानसून को प्रभावित करने वाले अन्य कारक

मानसून को कई अन्य कारक भी प्रभावित करते हैं इनमें सोमाली प्रभाव हैडली चक्र और वाकर चक्र प्रभाव प्रमुख हैं।

सोमाली एक तुलनात्मक ठण्डी जलधारा है जिसकी उत्पत्ति ग्रीष्म काल में सोमाली तट पर होता है। इसके कारण अरब सागर के तापमान में कमी आती है जिससे उच्च वायुदाब में वृद्धि होती है जो मानसून को मजबूत करता है।

LP.